राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

नवंबर, 2023 संस्करण

दामोदर घाटी निगम

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

अनुक्रमणिका

1. दामोदर घाटी निगम में नए आगंतुकों का स्वागत

2. संपादकीय

3. साम्राज्य से सौराज्य तक

4. माह के चयनित साहित्यकार

5. चुनौती

6. हिन्दी मेरी भाषा

7. आओ तेल की बचत करें हम

8. दामोदर घाटी निगम

9. डीवीसी गतिविधियां

10. प्रशासनिक शब्दावली

11. अक्तूबर, 2023 में सेवानिवृत्त कर्मचारीगण

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

संपादकीय

भारत विविधताओं का देश है जहां पर विभिन्न प्रकार की जलवायु, पौधे और प्राणी पाये जाते है । सदियों से ही अनेकता में एकता इस देश की विशेषता रही है । इन विशेषताओं में संभवतः भाषा संबंधी विविधता इस देश की विशिष्टता में सर्वोपरि है । इस बड़े भूभाग में बोली जाने वाली भाषाओं में से हिन्दी कदाचित अधिकांश क्षेत्र में व्यावहारिक रूप में बोली तथा समझी जाती है। हिन्दी एक भाषा ही नहीं अपितु विभिन्न प्रांतों के लोगों के लिए परस्पर व्यावहारिक संपर्क स्थापित करने और वैचारिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। हिन्दी में संपर्क साधन और विचारों के आदान-प्रदान से सुदूर देश वेदेश में रहने वाले भारतियों के मन में भी आत्मीयता का बोध होता है ।

निगम की राजभाषा ई-पत्रिका के इस नवीन अंक में लेख, कविताओं के साथ-साथ डीवीसी में होने वाले विभिन्न गतिविधियों को भी शामिल किया गया है । पाठकों से मिलने वाली प्रतिक्रियाएं ही हमारी वास्तविक प्रेरणा है । हमें आशा है कि यह अंक पाठकों को ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर लगेगा एवं अपनी प्रतिक्रियाएं हमें भेजते रहेंगे ।

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

बिरसा मुंडा

साम्राज्य से सौराज्य तक

आदिवासियों के महानायक बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1857 को झारखंड के आदिवासी दंपति सुगना और करमी के घर हुआ था। भारतीय इतिहास में बिरसा मुंडा एक ऐसे नायक थे, जिन्होंने भारत के झारखंड में अपने क्रांतिकारी चिंतन से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आदिवासी समाज की दशा और दिशा बदलकर नवीन सामाजिक और राजनीतिक युग का सूत्रपात्र किया।

बिरसा मुंडा ने साहस की स्याही से पुरुषार्थ के पृष्ठों पर शौर्य की शब्दावली रची। उन्होंने हिन्दू धर्म और ईसाई धर्म का बारीकी से अध्ययन किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि आदिवासी समाज मिशनरियों से तो भ्रमित है ही हिन्दू धर्म को भी ठीक से न तो समझ पा रहे है, न ग्रहण कर पा रहे है।

बिरसा मुंडा ने महसूस किया कि आचरण के धरातल पर आदिवासी समाज अंधविश्वासों की आंधीयों में तिनके-सा उड़ रहा है तथा आस्था के मामले में भटका हुआ है। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि सामाजिक कुरीतियों के कोहरे ने आदिवासी समाज को ज्ञान के प्रकाश से वंचित कर दिया है। धर्म के बिन्दु पर आदिवासी कभी मिशनरियों के प्रलोभन में आ जाते हैं, तो कभी ढकोसलों को ही ईश्वर मान लेते है।

बिरसा मुंडा सही माने में प्रक्रम और सामाजिक जागरण के धरातल पर तत्कालीन युग के एकलव्य और स्वामी विवेकानंद थे। बिरसा मुंडा की गणना महान देशभक्तों में की जाती है। ब्रिटिश हुकूमत ने इसे खतरे का संकेत समझकर बिरसा मुंडा को गिरफ्तार करके जेल में दाल दिया। वहाँ अंग्रेजों ने उन्हें धीमा जहर दिया था। जिस कारण वे 9 जून 1900 को शहीद हो गए।

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

माह के चयनित साहित्यकार

हरिवंश राय बच्चन

हरिवंश राय बच्चन का जन्म उत्तर प्रदेश के (इलाहाबाद) जो अब प्रयागराज के नाम से प्रसिद्ध है, में 1907 ई. में हुआ । इनके पिता का नाम प्रताप नारायण श्रीवास्तव तथा माता का नाम सरस्वती देवी था । इन्होंने काशी और प्रयाग में शिक्षा प्राप्त की तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से इन्होंने डॉक्टरेट की । कुछ समय ये प्रयाग विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे और फिर दिल्ली स्थित विदेश मंत्रालय में कार्य किया और वहीं से अवकाश ग्रहण किया ।

बच्चन जी उत्तर छायावादी काल के हालावाड़ी कवि थे । इनकी कविताओं में मानवीय भावनाओं की सामान्य एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है । सरलता, संगीतात्मकता, प्रवाह और मार्मिकता इनके काव्य की विशेषताएँ है और इन्हीं से इनको इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई ।

आपकी भाषा सरस सुबोध एवं सरल खड़ी बोली है । सरलता, स्वाभाविकता, लाक्षणिकता, संगीतात्मकता और प्रवाहमयता इनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ है । इनकी रचनाओं में मुख्यतः शृंगार के दोनों भेद तथा करुण रस प्रमुखता से मिलते हैं । इन्होंने छंदबद्ध और छंदमुक्त दोनों प्रकार की रचनाएँ की हैं । उपमा रूपक आदि प्रमुख अलंकारों के प्रयोग इनकी रचनाओं में प्रचुरता से देखने को मिलते हैं ।

आपका हिन्दी साहित्य में एक श्रेष्ठ स्थान है। आप कवि के साथ साथ एक लेखक भी थे । अपनी मात्र एक रचना “मधुशाला” से इनका नाम हिन्दी काव्य-साहित्य में अमर हो गया है । बच्चन जी को हालावाड़ के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है ।

प्रमुख रचनाएँ : नई से नई-पुरानी से पुरानी, बंगाल का काल, खड़ी के फूल, सूत की माला, मिलन यामिनी, प्रणय पत्रिका, धार के इधर-उधर, आरती और अंगारे, बुद्ध और नाचघर, त्रिभंगिमा, चार खेमे चौंसठ खूँटे, दो चट्टानें, बहुत दिन बीते, कटती प्रतिमाओं की आवाज़, उभरते प्रतिमानों के रूप, जाल समेटा, हलाहल, तेरा हार, मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, आत्म परिचय, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर ।

आत्मकथा – नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, क्या भूलु क्या याद करूँ, दशवार से सोपान तक प्रवास की डायरी, अन्य रचनाएँ, टूटी छूटी कड़ियाँ, नागर गीता ।

PHOTO.pdf

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

चुनौती

मनुष्य दे रहा है प्रकृति को चुनौती,
उसका शोषण करके बता रहा है
अपनी प्रगति ।
पर वह यह नहीं जानता कि प्रकृति हो
सकती क्रूर,
कर सकती है, उसका घमंड, मिनटों में
चकना चूर ll

प्रकृति जब काल बनकर आती है,
मनुष्य कि सुध-बुध खो जाती है ।
मच जाती अफरा-तफरी चारों ओर
चीख –पुकार का मंजर सुनाई देता है
हर ओर ll

इसी क्रम में वर्ष 2020 में, आई करोना
महामारी,
चीन तो निमित्त मात्र है, क्या यह नहीं है
प्रकृति अत्याचार
इतने पर भी क्या मनुष्य सुधार पाएगा?
क्या वैश्विक रफ्तार का पहिया धीमी गति
से जाएगा ?

अगर नहीं, तो प्रकृति की चुनौती फिर
स्वीकार करने के
लिए तैयार रहो,
और अपनी गलतियों का खामियाजा भरने
का इंतज़ार करो ।

श्री पंकज गुप्ता
सहायक प्रबन्धक (वित्त)
आंतरिक लेखा परीक्षा, कोलकाता

इस बार प्रकृति दिखाएगी कालिया
नाग का फन,
कि खतरे की घंटी, हमारे अंदर बनेगी
हर क्षण ll

शोषण और अत्याचार से मानव जाती
समाप्त हो जाएगी,
फिर एक नया सवेरा होगा, नई सभ्यता
आएगी ।
प्रकृति अपना ममतामय रूप फिर
दिखाएगी,
प्यार देगी, दुलार देगी और खुशियाँ
बरसाएगी ॥

PHOTO.pdf

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

हिन्दी मेरी भाषा

श्री सुमन कुमार
डीवीसी, सीटीपीएस

कल मातृभाषा मेरे सपनों में आई,
और मैं पहचान भी न पाई,
चेहरा बुझा हुआ,
कमर झुकी हुई,
जैसे कोई असहाय पीड़ा हो छाई।
मैं बोली - अरे माँ
तुम्हारी यह हालत?
अरे हिन्दी दिवस आया है,
फिर तुमने यह क्या हाल बनाया है?
मैंने जैसे दुखती रग छेड़ दी हो।
वह बो ली - मैं राजभाषा , मैं राष्ट्रभाषा ,
फिर भी हिंदी दिवस का तकाजा।
साल में एक दिन का प्यार
और सारा साल सौतेला व्यवहार।
मैं तो अपने ही देश में हूँ पराई,
सब जगह है अँग्रेजी ही छाई।
वाह रे मेरा हिन्दुस्तान,
फिर भी हिंदी का अल्पज्ञान।
तुम हिन्दी दिवस मना कर,
क्यों करते हो मेरा अपमान।
हिन्दी दिवस नहीं लगता
मुझे कोई उल्लास पर्व,
मुझे तो लगता है ,
यह मेरा श्राद्ध कर्म।
जिसमें श्रद्धा कम,
बस है औपचारिकता ,
इसीलिए तो पितृ पक्ष में है आता।
दिवस तो हम उनके हैं मनाते,
जिन्हें फिर सारा साल भूल जाते,
जैसे टीचर डे, वुमन डे, मदर डे, फादर डे ।

अखबारों , पत्रिकाओं की ,
एक दिन की सुर्खियाँ ,
फिर वर्ष भर झेलनी है ,
उपेक्षा की पीड़ा ,
किसी कोने में पड़ी लूँगी सिसकियाँ।
कौन सुनने आएगा ?
कोई नहीं, शायद कोई नहीं, कोई भी नहीं।
अगर करते हो मुझसे सच्चा प्यार,
तो लाओ मुझे अपनी भावनाओं में,
अपनी जुबान में, अपनी पहचान में,
अपने काम काज में,
अपने रीति रिवाज में,
और गर्व से कहो मैं हिन्दुस्तानी ,
हिन्दी मेरी भाषा , हिन्दी मेरी भाषा।

PHOTO.pdf

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

आओ तेल की बचत करें हम

जहरीली हुई हवाएँ और साँसे हो रही है कम ।
आओ तेल की बचत करें हम ॥

काले धुँए के प्रदूषण को, कम करे हम ।
आओ तेल की बचत करें हम ॥

सार्वजनिक परिवहनों में, चलो सफर करे हम ।
आओ तेल की बचत करें हम ॥

दैनिक कार्यों में तेल संरक्षण की, आदत डाले हम ।
आओ तेल की बचत करें हम ॥

लाल बत्ती का संकेत आने पर, गाड़ी के इंजन को बंद करे हम ।
आओ तेल की बचत करें हम ॥
छोटी दूरी के लिए साइकिल या पैदल चले हम ।
आओ तेल की बचत करें हम ॥

शुभकरण चौरड़िया
वरिष्ठ प्रबंधक (विद्युत)
मानव संसाधन विभाग,
दामोदर घाटी निगम, कोलकाता

बूँद-बूँद तेल की खपत, कम करे हम ।
आओ तेल की बचत करें हम ॥

बेहतर कल के लिए, स्वस्थ पर्यावरण आज बनाएँ हम ।
आओ तेल की बचत करें हम ॥

PHOTO.pdf

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

दामोदर घाटी निगम

गजेंद्र प्रसाद
कार्यपालक
केटीपीएस, डीवीसी

कई लड़खराता हुआ संस्थाओं ने
डीवीसी से पूछा
"सत्तर साल का बूढ़ा
अभी तक कैसे टीका ।"

इस पर हमारी डीवीसी बोली बोली
मैं शुद्ध दूध दही खाया हूं,
इसलिए अभी तक टिका हूं ।

बाढ़ नियंत्रण ऊर्जा उत्पादन
हमारा मुख्य उद्देश्य
सिंचाई,सीएसआर,नाविकीय,
वृक्षारोपण भी मेरा संदेश ।

पहले मेरा बेटा करता था सेवा,
खिलाता था मेवा ।
अब लाया है नए प्रोजेक्ट और
दिया सोलर सेवा ।

भारत भाग्य उर्जा रेखा ऐसा है मेरा सपना,
इसके लिए कर्मठ पुत्र दे रहा सहयोग अपना ।

उद्देश्य पूरा करते हुए बढ़ता है वह सशक्त कदम,
तन मन धन से करते हुए खुश रहते हरदम ।

कोडरमा, मेजिया,अंडाल,रघुनाथपुर,बोकारो
और चंद्रपुरा,
मैथन,पंचैत,तिलैया 6687.2 मेगावाट
बनाकर करते हैं उद्देश्य पूरा ।

ऊर्जावान है वह ऊर्जा वह बनाएगा,
नौजवान है वह भारत को नया बनाएगा ।

ट्रांसमिशन लाइन भी मेरा काफी बड़ा,
आधुनिकता से है कदम से कदम मिला खड़ा ।

कुछ बेटे करके दुश्मन से मेल ,
कहीं कर ना दे मुझको वह सेल ।

अब मैं कब तक जिऊंगा, भगवान ही बताएं,
अब मैं कब तक रहूंगा,भगवान ही बचाए ।

ऐसी स्थिति में घबराना नहीं मेरे पुत्र,
"ईमानदारी से काम करना"
यही है सफलता का सूत्र ।

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

डीवीसी गतिविधियां

दिनांक 08.10.2023 को श्री एम रघुराम,अध्यक्ष, डीवीसी द्वारा मेजिया ताप विद्युत केंद्र में इलेक्ट्रिक वाहन कैप्टिव चार्जिंग स्टेशन का उद्घाटन किया गया ।

दामोदर घाटी निगम में प्रख्यात भौतिक विज्ञानी डॉ. मेघनाद साहा को उनकी 130वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित किया गया ।

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

डीवीसी गतिविधियां

कोनार बांध परियोजना में स्वच्छता पखवाड़ा 2023 का अनुपालन

तिलैया बांध परियोजना में स्वच्छता पखवाड़ा 2023 का अनुपालन

डीएसटीपीएस में स्वच्छता पखवाड़ा 2023 का अनुपालन

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

डीवीसी टावर्स में दिनांक 30.10.2023 को सतर्कता जागरूकता दिवस पर प्रतिज्ञ लेते हुये अधिकारीगन

डीवीसी टावर्स, कोलकाता में 31.10.2023 को राष्ट्रीय एकता प्रतिज्ञा लिया गया।

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

डीवीसी टावर्स, कोलकाता में स्वच्छता पखवाड़ा 2023 का अनुपालन

डीवीसी महिला क्लब उड़ान द्वारा डांडिया उत्सव- 2023 का आयोजन

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

बधाई हो !

दो साल की इशिता को कंठस्थ 150 देशों के नाम

जागरण विशेष

हृदयानंद गिरि • दुर्गापुर

बांकुड़ा के मेजिया इलाके की रहनेवाली दो साल की इशिता माजी की स्मरण शक्ति के सभी मुरीद हैं। उसके पास जानकारियों का खजाना है। जो भी सिखाया जाता, पलभर में याद कर लेती, चुटकियों में सुना भी देती है। महज 27 सेकेंड में देश के 29 राज्यों की राजधानियों के नाम बताती है। चार मिनट में विश्व के 150 देश का नाम बताती है। शरीर के अंगों से लेकर फल-सब्जियों के भी नाम उसे याद हैं। इन्हीं खूबियों की वजह से इस साल अप्रैल में इंडिया बुक आफ रिकार्ड्स में उसका नाम दर्ज हुआ है। इशिता के पिता हरिशंकर माजी दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) के मेजिया ताप विद्युत केंद्र में अभियंता हैं, मां गृहिणी हैं। इशिता का जन्म 14 फरवरी, वर्ष 2020 में हुआ।

इशिता अभी बहुत छोटी है, इसलिए उससे खेल खेल में ही प्रश्न पूछे जाते हैं। मां सामने रहती है तो वह शरारतें भी खूब करती है। उसे इतनी जानकारी का श्रेय मां संपा को जाता है। संपा कहती हैं कि बड़ी बेटी ओशमिता माझी कक्षा तीन में पढ़ती है। इशिता जब एक साल 11 माह की थी, तब ओशमिता को कुछ चीजें याद करवा रही थी। इशिता भी मन लगाकर सुन रही है। कुछ देर में देखा कि जो बताया गया वह इशिता को याद हो गया, हम बड़ी बेटी से पूछते तो उसका जवाब वह देती। तब खेल-खेल में उसे भी सामान्य ज्ञान की जानकारी देना शुरू कर दिया। दस दिन में तो वह देश के कई राज्यों के नाम बताने लगी। अब विश्व के 150 देशों के नाम उसे याद हैं, कई और भी जानकारियां उसे हो गई हैं। उसका वीडियो आनलाइन इंडिया बुक के लिए भेजा तो चयन हो गया।

इशिता माजी • जागरण

27 सेकेंड में बताती 29 राज्यों की राजधानियां, नन्हीं इशिता की याददाश्त से सभी चकित

- इंडिया बुक आफ रिकार्ड्स में दर्ज हो चुका है इस चुलबुली बिटिया का नाम
- बचपन से कुछ बच्चों के न्यूरान की क्षमता होती अधिक, बढ़ जाती याददाश्त

इसलिए इंडिया बुक आफ रिकार्ड्स में दर्ज हुआ नाम

इशिता दो वर्ष एक माह की थी, तब उसे 17 तरह के टापिक याद थे। इस खूबी के लिए उसका नाम इंडिया बुक आफ रिकार्ड्स में दर्ज हुआ। उसे तीन अंग्रेजी कविता, अंग्रेजी का अक्षर ज्ञान एवं उनके शब्द के अर्थ, बारह माह, एक सप्ताह के दिन, एक से 20 तक गिनती, राज्यों की राजधानी के नाम, दस राष्ट्रीय चिह्न, आधा दर्जन वाहनों के नाम, पांच फल, सात सब्जियां, पांच रंग, 11 जानवरों, 15 शरीर के अंग के नाम उसे याद हैं।

हमलोगों के लिए गर्व की बात है कि हमारे इलाके की एक बच्ची का नाम इंडिया बुक आफ रिकार्ड्स में दर्ज हुआ है। मैंने भी इस परिवार को शुभकामना दी है। उम्मीद है कि वह बच्ची आगे चलकर बहुत होनहार होगी, अपने राज्य व देश का नाम दुनिया में रोशन करेगी।

राजा गोपाल मुखर्जी, प्रखंड विकास पदाधिकारी, गंगाजलघाटी, बांकुड़ा।

कुछ बच्चों में बचपन से ही न्यूरान की क्षमता अधिक होती है। इससे उनके दिमाग में किसी भी जानकारी को ग्राह्य करने की क्षमता बढ़ जाती है। उनकी स्मरण शक्ति तीव्र होती है। वे सुनकर बहुत कुछ याद कर लेते हैं।

डा. प्रवीण यादव, न्यूरो सर्जन, दुर्गापुर

श्री हरीशंकर माजी, सहायक प्रबन्धक (सीएंडआई), एमटीपीएस की दो साल की पुत्री सुश्री ईशिता माजी को कंठस्थ 150 देशों के नाम । इंडिया बूक ऑफ रेकॉड्र्स में दर्ज हुआ नाम ।

श्री गजेंद्र प्रसाद, कार्यपालक, केटीपीएस, डीवीसी के सुपुत्र श्री ईशु प्रसाद ने वर्ष 2022 में आयोजित एसओएफ़ राष्ट्रीय विज्ञान ओलिंपियाड में भाग लिया तथा अपने स्कूल –जयहिंद रेसिडेंसियल स्कूल , तिलैया, झारखंड में प्रथम स्थान प्राप्त किया ।

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

प्रशासनिक शब्दावली

Accredited	प्रत्यायित
Accrue	प्रोद्भूत होना
Activation	सक्रियण
Ad interim	अंतरिम
Ad valorem	मूल्यानुसार
Adduce	पेश करना
Adjutant	सहायक
Before hand	समय-पूर्व
Benevolence	हितकारिता
Best value	उत्तम मूल्य
Bulk indent	थोक मांग-पत्र
Bureau	ब्यूरो
Cadre post	संवर्ग पद
Candidature	अभ्यर्थिता
Case law	निर्णय विधि
Cess	उपकार
Chiasmus	व्यतिक्रम
Columnist	स्तंभ लेखक
Coherence	संयोग

Contention	विवाद
Consumable	उपभोग्य
Cost ceiling	लागत सीमा
Derogation	अल्पीकरण
Detain	रोकना
Detrimental	अहितकर
Diarise	डायरी करना
Exim Policy	आयात-निर्यात नीति
Exponent	प्रतिपादक
Extent	व्यापक
Fidelity	निष्ठा
Foreward	प्राक्कथन
Formula	सूत्र
Forthwith	तत्काल
Founder	संस्थापक
Hearsay	सुनी-सुनाई
Hierarchy	पदानुक्रम
In cash	नकद
In fact	वास्तव में

राजभाषा मासिक ई -पत्रिका

अक्तूबर, 2023 में सेवानिवृत्त कर्मचारीगण

क्रम सं	नाम	पदनाम	विभाग	केंद्र
1	श्री रघुनाथ पाल	सहायक सचिव	विद्युत	कोलकाता
2	श्री कार्तिक पात्र	सहायक प्रबन्धक (यंत्रिकी)	ओ एंड एम	एमटीपीएस
3	श्री स्वपन कुमार भद्र	उप प्रबन्धक (असैनिक)	भूसंवि	हजारीबाग
4	श्री भवानी प्रसाद दान	तकनीकी सहायक	ईंधन	डीएसटीपीएस
5	श्री अतुल कुमार	वरिष्ठ स्वास्थ्य निरीक्षक पीजी-II	चिकित्सा	डीटीपीएस
6	श्री जयंत कुमार नाग	वरिष्ठ भंडारपाल (पीजी)	एकीकृत भंडार	मैथन
7	श्री समर विश्वास	सहायक श्रेणी-II	विद्युत	मैथन
8	श्री अनिलेश चन्द्र मित्र	सहायक नियंत्रक	प्रणाली	मैथन
9	श्री स्नेहेंदु मुखर्जी	कनिष्ठ एमपीएचडब्ल्यू श्रे-I	चिकित्सा	हावड़ा
10	श्री बजरंगी रजक	तकनीकी सहायक	सी एंड एम	सीटीपीएस
11	श्री कल्याण दास	सहायक नियंत्रक (यान्त्रिकी)	ओ एंड एम	डीटीपीएस
12	श्री सायनतन पाल	सर्वेक्षक पीजी-2	असैनिक	मैथन
13	श्री दिलीप कुमार दास	तकनीकी सहायक	प्रणाली	दुर्गापुर
14	श्री किसुन महतो	तकनीकी सहायक	ओ एंड एम	बीटीपीएस
15	श्रीमती मुनी देवी	संदेशवाहक	वित्त एवं लेखा	केटीपीएस
16	श्री शुभंकर दे	खलासी	ओ एंड एम	एमटीपीएस
17	श्री तपन कुमार दाँ	कनिष्ठ मजदूर	ओ एंड एम	डीटीपीएस